चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक सवेरा........

दिनांक 16.2.2021....पृष्ठ संख्या.......7.........कॉलम.....3-6.......

हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला आयोजित

जल संरक्षण और फसल विविधिकरण समय की मांग : डा. ए.के. सिंह

हिसार, 15 फरवरी (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय ने सोमवार को एक कार्यशाला का आयोजन किया। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन हकृवि के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने किया। इस मौके पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने कहा कि जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। इस मौके पर हकृवि कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर, राजस्थान के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके।

वर्कशॉप के दौरान वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यातिथि व मौजूद वैज्ञानिक।

इन कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक हुए शामिल

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी। इस कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहाबाद, कैथल, जींद, रोहतक, सोनीपत, भिवानी, यमुनानगर, झज्जर, कुरूक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।

आधुनिक तकनीक पर किसानों को करें जागरूक : कुलपति

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकतिस आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....समर उजाला.....

दिनांक 16.2.2021....पृष्ठ संख्या...3.....कॉलम....1-4.....

जल संरक्षण

हरियाणा और दिल्ली के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित

पानी बचाने के लिए फसल चक्र जरूरी : डॉ. एके सिंह

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधीकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधीकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाएं।

फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. एके सिंह ने कहे। वे एचएयू में हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि रहे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा किया गया। कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान जोन-2 जोधपुर (राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।

वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यातिथि व मौजूद वैज्ञानिक। संवाद

वर्ष 2021 की योजनाओं को लेकर मंथन

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर मंथन किया। कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहाबाद, कैथल, जींद, रोहतक, सोनीपत, भिवानी, यमुनानगर, झज्जर, कुरूक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।

मिट्टी के पोषक तत्वों की जांच जरूरी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना होगा। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है इसलिए हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए ठर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 16.2.2021 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....2-4.....

डॉ. एके सिंह बोले- चावल और गेहूं के फसल चक्र को बदलना जरूरी ताकि जल संरक्षण हो

एचएयू में हरियाणा और दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्यस्तरीय कार्यशाला हुई

भास्कर न्यूज | हिसार

जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी, जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को अपनाने के लिए सहमत हो जाए।

यह विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. एके सिंह ने व्यक्त किए। वह हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे और विवि के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली व एचएयू हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर (राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर चर्चा की।

एचएयू में वर्कशॉप के दौरान वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यातिथि व मौजूद वैज्ञानिक।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**15.02.2021**	--	--

जल संरक्षण समय की मांग : डॉ. सिंह

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक(विस्तार शिक्षा) डॉ. ए.के. सिंह ने कहे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार

शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर(राजस्थान)के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।

आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए किसानों को जागरूक करें : समर सिंह

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकतिस आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**15.02.2021**	--	--

हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना (2021) कार्यशाला आयोजित

जल संरक्षण और फसल विविधिकरण समय की मांग : डॉ. सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. ए.के. सिंह ने कहे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर

(राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके।

आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए किसानों को जागरूक करें : प्रो. समर सिंह

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा। आवास की बढ़ती मांग, शहरीकरण और औद्योगीकरण के बढ़ते स्तर के कारण, उपजाऊ कृषि भूमि का महत्वपूर्ण क्षेत्र गैर-कृषि उपयोग में स्थानांतरित किया जा रहा है। ये कारक किसानों की खाद्य सुरक्षा और आजीविका के अवसरों को खतरे में डाल रहे हैं। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले संसाधन पानी, मिट्टी, उर्वरक, अन्य रासायनिक इनपुट, वायु और लोग हैं। इसलिए, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त आवश्यकता है, जो खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण को बेहतर बनाने, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के क्षरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

इन कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक हुए शामिल

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी। इस कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहाबाद, कैथल, जींद, रोहतक, सोनीपत, भिवानी, यमुनानगर, झज्जर, कुरूक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	**15.02.2021**	--	--

वर्कशॉप हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला आयोजित

किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता : कुलपति प्रो. समर सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. ए. के. सिंह ने कहे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर (राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि

हिसार। वर्कशॉप के दौरान वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्यातिथि व मौजूद वैज्ञानिक।

चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए।

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी। इस कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहाबाद, कैथल, जींद, रोहतक, सोनीपत, भिवानी, यमुनानगर, झज्जर, कुरूक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**15.02.2021**	--	--

'फसलों का विविधिकरण समय की मांग'

हिसार/15 फरवरी/रिपोर्टर

जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (विस्तार शिक्षा) डॉ. एके सिंह ने रखे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाईन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर (राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्ट और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा। आवास की बढ़ती मांग, शहरीकरण और औद्योगीकरण के बढ़ते स्तर के कारण, उपजाऊ कृषि भूमि का महत्वपूर्ण क्षेत्र गैर-कृषि उपयोग में स्थानांतरित किया जा रहा है। ये कारक किसानों की खाद्य सुरक्षा और आजीविका के अवसरों को खतरे में डाल रहे हैं। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले संसाधन पानी, मिट्टी, उर्वरक, अन्य रासायनिक इनपुट, वायु और लोग हैं। इसलिए, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त आवश्यकता है, जो खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण को बेहतर बनाने, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के क्षरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**15.02.2021**	--	--

जल संरक्षण और फसल विविधिकरण समय की मांग : डॉ. ए.के. सिंह

हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला आयोजित

वाटिका@हिसार। जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक(विस्तार शिक्षा) डॉ. ए.के. सिंह ने कहे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे।

इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर(राजस्थान) के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकतिस आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा। आवास की बढ़ती मांग, शहरीकरण और औद्योगीकरण के बढ़ते स्तर के कारण, उपजाऊ कृषि भूमि का महत्वपूर्ण क्षेत्र गैर-कृषि उपयोग में स्थानांतरित किया जा रहा है। ये कारक किसानों की खाद्य सुरक्षा और आजीविका के अवसरों को खतरे में डाल रहे हैं। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले संसाधन पानी, मिट्टी, उर्वरक, अन्य रासायनिक इनपुट, वायु और लोग हैं। इसलिए, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त आवश्यकता है, जो खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण को बेहतर बनाने, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के क्षरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**16.02.2021**	--	--

चावल व गेहूं का फसल चक्र बदलना बहुत जरूरी : डॉ. ए.के. सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 16 फरवरी : जल संरक्षण और फसलों का विविधिकरण मौजूदा समय की अति जरूरी मांग है। इसके लिए वैज्ञानिकों को ऐसी योजनाएं बनानी होंगी जिससे न केवल जल का संरक्षण हो बल्कि किसान फसल विविधिकरण को भी अपनाने के लिए सहमत हो जाए। ये विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक(विस्तार शिक्षा) डॉ. ए.के. सिंह ने कहे। वे हरियाणा व दिल्ली राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों की राज्य स्तरीय योजना कार्यशाला को ऑनलाइन माध्यम से बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे जबकि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विशिष्ट अतिथि थे। इस वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ आईसीएआर के गीत से किया गया। इस कार्यशाला में आईसीएआर की कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, जोन-2 जोधपुर(राजस्थान)के करीब 67 कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि चावल व गेहूं के फसल चक्र को बदलना बहुत जरूरी है ताकि पानी का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि किसानों को नई कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें अपनी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिकों का कर्तव्य बनता है कि वे किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकतिस आधुनिक तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, लेजर लेवलिंग, बेड प्लांटिंग, सूक्ष्म एवं टपका सिंचाई आदि को अपनाने के लिए जागरूक करें। मिट्टी और पानी जैसे बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए संरक्षण कृषि पर जोर देना चाहिए। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच करनी होगी। देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश में स्थूल और सूक्ष्म पोषक तत्वों दोनों के असंतुलित उपयोग की मुख्य समस्या है। इसलिए, हमें फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए उर्वरकों की सिफारिश और अपनाने के बीच की खाई को पाटना होगा। आवास की बढ़ती मांग, शहरीकरण और औद्योगीकरण के बढ़ते स्तर के कारण, उपजाऊ कृषि भूमि का महत्वपूर्ण क्षेत्र गैर-कृषि उपयोग में स्थानांतरित किया जा रहा है। ये कारक किसानों की खाद्य सुरक्षा और आजीविका के अवसरों को खतरे में डाल रहे हैं। सबसे अधिक प्रभावित होने वाले संसाधन पानी, मिट्टी, उर्वरक, अन्य रासायनिक इनपुट, वायु और लोग हैं। इसलिए, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकी (आरसीटी) पर ध्यान देने की सख्त आवश्यकता है, जो खेती की लागत को कम करने, मिट्टी के कार्बन निर्माण को बेहतर बनाने, पानी के बहाव को कम करने और मिट्टी के क्षरण आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा ने बताया कि इस कार्यशाला में विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 की कार्ययोजना को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की और भविष्य के लिए किसान हितैषी योजनाओं को प्राथमिकता दी। इस कार्यशाला में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय से हिसार, फरीदाबाद, फतेहाबाद, कैथल, जींद, रोहतक, सोनीपत, भिवानी, यमुनानगर, झज्जर, कुरूक्षेत्र, महेंद्रगढ़, सिरसा, पानीपत, एनडीआरआई करनाल, आईएआरआई नई दिल्ली, कृषि विज्ञान केंद्र दिल्ली, गैर सरकारी संगठन अंबाला व रेवाड़ी आदि के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया।